संगति

भाग – १३

'संयोग' का विपरीत पहलु **'वियोग'** है।

'संयोग' द्वारा जीवों का **'मेल'** या **'संगति' होती है ।**

'वियोग' द्वारा **'बिछुड़ते' हैं।**

समस्त सृष्टि 'संयोग' या 'वियोग' में विचरण कर रही है तथा इनके प्रभाव अधीन जीवन ढालती तथा परिणाम भोगती है।

संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ।। (पृ. ६)

जीअ जंत सभि तेरा खेलु ।।
विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ।। (पृ. ११)

संजोगु विजोगु उपाइओनु सिसटी का मूलु रचाइआ ।। (पृ ५०९)

सजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ ।। (पृ. १००७)

संजोगु विजोगु मैरै प्रभि कीए ।।
सिसटि उपाइ दुखा सुख दीए ।। (पृ १०३२)

संजोगु विजोगु करतै लिखि पाए किरतु न चलै चलाहा हे ।। (पृ १०५८)

सृष्टि के कण-कण में ईश्वरीय 'ज्योति' परिपूर्ण है — जिस कारण समस्त सृष्टि **अकाल पुरुष का अंश है।**

कहु कबीर इहु राम की अंसु ।। (पृ ८७१)

कंचन काइआ निरमल हंसु ।।
जिसु महि नामु निरंजन अंसु ।। (पृ. १२५६)

अकाल पुरुष **'प्रेम स्वरूप' है।** इसलिए सृष्टि के कण-कण में **ईश्वरीय 'प्रेम का अंश' प्रविष्ट है** तथा सभी जीव इसी **'प्रेम डोर' में** पिरोये **हुए हैं** । सृष्टि का कण-कण, अपने 'स्त्रोत' — **अकाल पुरुष की ओर तथा एक-दूसरे की ओर इस प्रेम डोर द्वारा आकर्षित हो रहा है** ।

तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिंच तनी ।। (पृ ८२७)

इस गुप्त ईश्वरीय **'प्रेम आकर्षण'** (gravity) को ही **'संयोग' कहा जाता है** — जिससे जीवों का परस्पर **'मेल-मिलाप' या 'संगति' होती है ।**

यह **'संयोग'** या ईश्वरीय **'प्रेम-डोर'** प्राकृतिक रूप से सहज स्वभाव हमारी अन्तर-आत्मा में **एक दूसरे को आकर्षित करती है,** जिस द्वारा हमारा परस्पर —

मेल

संग

संगति

सत संगति

साध संगति

आदान-प्रदान

होता रहता है।

ऐसी दैवीय 'सत संगति' द्वारा हम अनेक आत्मिक गुणों की —

सांझ करते हैं

वाणिज्य करते हैं

आदान प्रदान करते हैं

'प्रभाव' लेते-देते हैं

'छुह' (infection) लगती है

'प्रेम-प्याला पीते हैं

साकी होकर पिलाते हैं

मस्त मतवाले होते हैं

'अहम् मुक्त गुलाम' बनते हैं

'आप गवाइ सेवा' करते हैं ।

इस अमूल्य **ईश्वरीय 'देन'** के लिए हमें कोई 'साधना' या जोखिम नहीं उठाना पड़ता। यह **आत्मिक 'खजाना'** हमें **'आत्मिक पिता' का 'अंश' होने के नाते 'विरासत' में सहज स्वभाव प्रदान होता है।**

पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ।।
ता मेरै मनि भइआ निधाना ।। (पृ १८६)

इस **'नाम' खजाने को संगी-साथियों के साथ साध संगति अथवा 'संत मंडली' में मिल बांटने का हुकुम है ।**

खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ।।
तोटि न आवै वधदो जाई ।। (पृ १८६)

जो हरि दसे मितु तिसु हउ बलि जाई ।।
गुण साझी तिन सिउ करी हरि नामु धिआई ।। (पृ ६४७)

आवश्यक बात यह है कि इन **आत्मिक गुणों अथवा बरकतों के हम तब तक हिस्सेदार अथवा हकदार होते हैं,** जब तक हम अकाल पुरुष के वारिस बने रहें अथवा हमारा आत्मिक 'संयोग' बना रहे तथा हम ईश्वरीय 'प्रीत-डोर' में पिरोये रहें।

दूसरे शब्दों में जब तक हम **ईश्वरीय 'हुकुम' में 'सुर' (in tune) हुए** रहेंगे तब तक हमारा **आत्मिक 'संयोग' या 'नाता' बना रहेगा तथा हम ईश्वरीय विरासत के हकदार रहेंगे।**

काइआ सेज गुर सबदि सुखाली गिआन तति करि भोगो ।।
अनदिनु सुखि माणे नित रलीआ नानक धुरि संजोगो।। (पृ ७७३)

जब हमारे मन पर **'माया-मोहिनी' की 'कुसंगति'** द्वारा झूठा रंग चढ़ जाता है, तब **'अहम्' के 'भ्रम-भुलाव'** में हमारा **आत्मिक 'नाता'** हमारी **चेतनता से लुप्त हो जाता है** तथा हम अपनी **'आत्मिक विरासत' को 'भूल' जाते हैं।**

पंच दूत मिलि पिरहु विछोड़ी ।। (पृ ३७५)

ककै कामि क्रोधि भरमिओहु मूढे
ममता लागे तुधु हरि विसरिआ ।। (पृ. ४३५)

झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना ।। (पृ ४८६)

इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ ।।
पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ।। (पृ ७१०)

एह माइआ जितु हरि विसरै
मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ।। (पृ ९२१)

इस प्रकार 'मोह-माया' के भ्रम-भुलाव में अपनी **ईश्वरीय विरासत को 'भूलना' ही वियोग है।**

इस **वियोग** के कारण हम —

आत्मिक विरासत को 'भूल' जाते हैं
'मोह-माया' में 'फँस' जाते हैं
परमात्मा से **विमुख हो जाते हैं।**
'मैं-मेरी' में विचरण करते हैं
पांच विषाक्तों की 'कुसंगति' करते हैं
माया में खचित हो कर दुखी होते हैं
अहम् में 'कर्म-बद्ध' होते हैं
आवागमन के चक्र में पड़ते हैं
यम के वश पड़ते हैं।

मनमुख सोझी ना पवै वीछुड़ि चोटा खाइ ।। (पृ. ६०)

परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ।।
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ।। (पृ. १३५)

जो जीअ हरि ते विछुड़े से सुखि न वसनि भैण ।। (पृ. १३६)

जो जीअ तुझ ते बीछुरे पिआरे जनमि मरहि बिखु खाइ ।। (पृ. ४३१)

विछुड़िआ मेला नही दूखु घणो जम दुआरि ।। (पृ. १०१०)

जब तक हमारा मन अकाल पुरुष की **'प्रीत डोर' से खिंचा रहता है,** तब तक हम —

ईश्वरीय विरासत के हकदार होते हैं
परमात्मा की 'याद' में होते हैं
'सत संगति' करते हैं
'साध संगति' करते हैं
'गुर संगति' करते हैं
'आत्मिक रंग' अनुभव करते हैं
आत्मिक 'रस' पान करते हैं
आत्मिक गुणों का 'आदान-प्रदान' करते हैं
ईश्वरीय खजाने की 'सांझ' करते हैं
आत्मिक 'वाणिज्य' करते हैं
आत्मिक 'संयोग' अनुभव करते हैं।

उपरोक्त विचारों का निचोड़ यह है कि अपनी आत्मिक 'विरासत' अथवा अकाल पुरुष को **साध संगति में सिमरन द्वारा** —

'याद' करना ही **'संयोग'** है।

नामु हमारै सउण संजोग ।। (पृ. ११४५)

गुरमति सतसंगति न विछुड़हि अनदिनु नामु सम्हालि ।। (पृ १२५८)

इसके ठीक विपरीत, माया की 'कुसंगति' द्वारा, अहम के भ्रम-भुलाव में आत्मिक 'विरासत' को —

भूल जाना ही 'वियोग' है।

जिस नौ करता विसरै तिसहि विछोड़ा सोगु जीउ ।। (पृ ७६०)

दूसरे शब्दों में 'वियोग' द्वारा बिछुड़ा हुआ 'जीव' आत्म रंग वाली 'सत्संगति' अथवा 'साध संगति' के मेल द्वारा ही **पुनः अकाल पुरुष से 'संयोगी मेल' कर सकता है।**

गुरु पूरा हरि जापीऐ नित कीचै भोगु ।।
साधसंगति कै वारणै मिलिआ संजोगु ।। (पृ ८१७)

तभी गुरबाणी में 'साध संगति' करने का ताकीदी हुकुम है —

संत जनहु मिलि भाईहो सचा नामु समालि ।। (पृ ४९)

साधू संगु करहु सभु कोइ ।।
सदा कलिआण फिरि दूखु न होइ ।। (पृ १९६)

संतसंगि सिमरत रहहु इहै तुहारै काज ।। (पृ २५७)

'जीव' इस मनमोहक माया की **'कुसंगति'** में अहम् के भ्रम-भुलाव में पलच-पलच कर त्राहि-त्राहि कर रहे हैं।

हरिसाजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ।।
पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ।।
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ।। (पृ १३३)

राज जोबन बिसरंत हरि माइआ **महा दुखु एहु महांत कहै** । (पृ ६८३)

ये **मायावादी 'जीव'** अपने आत्मिक 'माता-पिता' अथवा अकाल पुरुष को भूल कर अपनी **ईश्वरीय विरासत से वंचित रहते हैं** तथा नरक भोगते हैं ।

मनमुखु रोगी है संसारा ।।
सुखदाता विसरिआ अगम अपारा ।। (पृ ११८)

नानक प्रभ बिसरत मरि जमहि अभागे ।। (पृ २९८)

हरि छोड़नि से दुरजना पड़हि दोजक कै सूलि ।। (पृ ३२२)

जिह प्रभू बिसारि गुर ते बेमुखाई ते नरक घोर महि परिआ ।। (पृ ६१३)

प्रभू छोडि अन लागै नरकि समंजीऐ ।। (पृ ७०८)

यदि जीव, अत्यंत दुखी हो कर, ईश्वर के सम्मुख मुँह करता भी है, तब भी वह दिखावटी संगति के प्रभाव अधीन **निरर्थक कर्म काण्ड में ही फँसा रहता**

है, तथा अपना अमूल्य जीवन **व्यर्थ खो देता है।**

साधसंगति बिनु भ्रमि मुई करती करम अनेक ।। (पृ ९२८)

जिनी नामु विसारिआ बहु करम कमावहि होरि ।।
नानक जम पुरि बधे मारीअहि जिउ संन्ही उपरि चोर ।। (पृ. १२४७)

कूर क्रिआ उरझिओ सभ ही जग
सी भगवान को भेदु न पाइओ ।। (सवयेपा. १०)

यदि कोई विरला 'जीव' अपने नरकमयी दुखी जीवन से तंग आकर त्राहि-त्राहि कर के, सतिगुरू की शरण आये, तब सतिगुरू की कृपा द्वारा उसे सच्ची-पवित्र आत्मिक जीवन वाली 'सत संगति'- 'साधसंगति' अथवा 'संत मंडली' की **'संगति' प्राप्त होती है ।**

किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधु संगु ।।
जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु ।। (पृ. ७१)

किरपा निधि किरपाल धिआवउ ।।
साध संगि ता बैठणु पावउ ।। (पृ १८३)

कहु नानक जा कउ भए दइआला ।।
साधसंगि मिलि भजहि गोपाला ।। (पृ १९०)

प्रभु क्रिपालु किरपा करै।।
नामु नानक साधू संगि मिलै ।। (पृ. २११)

जिसु भइआ क्रिपालु तिसु सतसंगि मिलाइआ ।। (पृ. २३९)

हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ।। (पृ. २९३)

भए क्रिपाल गुपाल गोबिंद ।।
साधसंगि नानक बखसिंद ।। (पृ ३९१)

जब तक 'जीव' को ऐसी **आत्मिक रंग-रस वाली अथवा 'प्रेम-भक्ति' वाली 'साध संगति' नहीं मिलती** — उतने समय तक वह **मोह-माया के**

भ्रमजाल में से नहीं निकल सकता तथा न ही उसे आत्मिक मंडल अथवा अपनी आत्मिक विरासत का ज्ञान हो सकता है, तथा न ही 'आत्मिक रस' से लाभान्वित हो सकता है।

साध संगति भगवान भजन बिनु

कही न सचु रहिओ ।। (पृ ३३६)

खोजत खोजत सुनी इह सोइ ।।

साध संगति बिनु तरिओ न कोइ ।। (पृ ३७३)

बिनु संगती सभि ऐसे रहहि जैसे पसु ढोर ।। (पृ ४२७)

बिनु साध न पाईऐ हरि का संगु ।। (पृ. ११६९)

पूजाचार करत मेलंगा ।। चक्र करम तिलक खाटंगा ।।

दरसनु भेटे बिनु सतसंगा ।। (पृ १३०५)

जब तक हम प्रकाश में रहते हुए **प्रकाश की 'संगति' करते हैं, तब तक उसके अनगिनत 'सुखों' का लाभ उठाते हैं ।**

परन्तु जब हम **प्रकाश से परे हो जाते हैं** या **उस ओर 'पीठ' कर लेते हैं, तब हम अन्धकार की कुसंगति करते हैं** तथा अन्धकार से उत्पन्न सारे दुख-क्लेश भोगते हैं ।

इसी प्रकार जब तक हमारा मन अकाल पुरुष के सिमरन द्वारा **'याद' में रहता है,** तब हम **अनुभवी ज्ञान के प्रकाश** अथवा **'नाम' की संगति द्वारा अनगिनत 'आत्मिक बरकतों' का लाभ लेते तथा सुख अनुभव करते हैं ।**

दूसरी ओर, जब हमारा मन परमेश्वर को **'भूल' जाता है,** तब हम अकाल पुरुष से विमुख हो कर 'माया' के अन्धकार में विचरण करते है अथवा **माया के अनेक दूतों की 'कुसंगति' करते हैं तथा मोह-माया में पलच-पलच कर दुख भोगते हैं ।**

परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ।। (पृ १३५)

तूं विसरहि तां सभु को लागू चीति आवहि तां सेवा ।। (पृ.३८३)

सरब दूख जब बिसरहि सुआमी ।। (पृ ३९४)

कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ।। (पृ ५२२)

सोई दुहेला जगि जिनि नाउ विसारीआ ।। (पृ ९६४)

नामु विसारि मनि तनि दुखु पाइआ ।।
माइआ मोहु सभु रोगु कमाइआ ।। (पृ. १०६४)

दूसरे शब्दों में, **अकाल पुरुष को 'भुलाने' या 'विमुख' होने से ही हम मायिकी भ्रम-भुलाव के मीठे मोह में फँस जाते हैं तथा 'कुसंगति' द्वारा कर्म करते तथा परिणाम भोगते हैं ।**

इसलिए आत्मिक जीवन से प्रेरित 'सत् संगति' अथवा **'साध संगति' बिना जीव की दशा दयनीय होती है,** जिसे गुरबाणी में यूँ ब्यान किया गया है —

संता सेती रंगु न लाए ।।
साकत संगि विकरम कमाए ।।
दुलभ देह खोई अगिआनी
जड़ अपुणी आपि उपाड़ी जीउ ।। (पृ. १०५)

मिरतक देह साधसंग बिहूना ।।
आवत जात जोनी दुख खीना ।। (पृ १९०)

डोलि डोलि महा दुखु पाइआ बिना साधू संग ।।
मोह रोग सोग तनु बाधिओ बहु जोनी भरमाईऐ ।। (पृ. ४०५)

टिकनु न पावै बिनु सतसंगति
किसु आगै जाइ रूआईऐ ।। (पृ ५३२)

साध संगति बिना भाउ नही ऊपजै
भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ।। (पृ. ६९४)

इसी लिए ऐसी **आत्म रंग-रस भरी 'सत संगति'** के लिए गुरबाणी में हमें यूँ याचना करनी सिखलायी है —

साधसंगि प्रभ देहु निवास ।। (पृ २९०)

हरि जीउ आगै करी अरदासि ।।

साधू जन संगति होइ निवासु ।। (पृ ४१५)

भाई रे मो कउ कोई आइ मिलै हरि नामु द्रिड़ावै ।। (पृ. ४९४)

हरि हरि संत मिलहु मेरे भाई

हरि नामु द्रिड़ावहु इक किनका ।। (पृ ६५०)

हम ऊपरि किरपा करि सुआमी

रखु संगति तुम जु पिआरी ।। (पृ ६६६)

जन नानक संगति साध हरि मेलहु

हम साध जना पग राली ।। (पृ ६६८)

हरि हरि मेलि मेलि जन साधॅे हम साध जना का कीड़ा ।। (पृ ६९८)

कहु नानक प्रभ बखस करीजै ।।

करि किरपा मोहि साधसंगु दीजै ।। (पृ ७३८)

नानक की प्रभ बेनती साधसंगि समाउ ।। (पृ. ७४५)

करि किरपा मोहि मारगि पावहु ।।

साधसंगति कै अंचलि लावहु ।। (पृ ८०१)

नानक हरि जसु हरि जन की संगति दीजै

जिन सतिगुरु हरि प्रभु जाता है । (पृ. १०३२)

ऐसी मांगु गोबिद ते ।।

टहल संतन की संगु साधू का हरि नामां जपि परम गते ।। (पृ १२९८)

गुरबाणी में ऐसी आत्मिक 'सत संगत' अथवा **'साध-संगति' के अनेकानेक गुण बताये गये हैं** — जिन में से कुछ एक गुणों को संक्षिप्त रूप में यहाँ दर्शाया जा रहा है —

'साध संगति' द्वारा **हरि** तथा **प्रभु नाम 'मीठा'** लगता है —

साध कै संगि लगै प्रभु मीठा ।। (पृ २७२)

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ।।
नामु प्रभू का लागा मीठा ।। (पृ २९३)

साध संगि मन सोवत जागे ।।
तब प्रभ नानक मीठे लागे ।। (पृ३८६)

सतसंगति गुर की हरि पिआरी
जिन हरि हरि नामु मीठा मनि भाइआ ।। (पृ. ४९४)

संत जना मिलि हरि रसु पाइआ
हरि मनि तनि मीठ लगानी ।। (पृ. ११९९)

साध संगति द्वारा **हरि रस** प्राप्त होता है —

धनु धनु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ
मिलि जन नानक नामु परगासि ।। (पृ. १०)

वडभागी हरि संतु मिलाइआ ।।
गुरि पूरै हरि रसु मुखि पाइआ ।। (पृ. ९५)

साध संगि मिलि हरि रसु पाइआ ।। (पृ ३७४)

सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई
विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ।। (पृ. ४४६)

कहु नानक किरपा करी ठाकुर **मिलि साधू रस भूंचा ।।** (पृ ५३४)

साधसंगति महि हरि रसु पाईऐ
गुरि मिलिऐ जम भउ भागा ।। (पृ ५९८)

सतसंगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ।।(पृ. ६९०)

संगति संत मिलहु सतसंगति
मिलि संगति हरि रसु आवैगो ।। (पृ १३०९)

साधू साध सरनि मिलि संगति जितु हरि रसु काढि कढीजै ।।
(पृ १३२६)

'सतसंगति' में ही **नाम सिमरन की कमाई** होती है —

मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ।। (पृ. १२)

हरि का नामु धिआईऐ सतसंगति मेलि मिलाइ ।। (पृ. २६)

साध संगि जपिओ भगवंतु ।। (पृ १८३)

सतसंगति लगि हरि धिआईऐ हरि हरि चलै तैरै नालि ।। (पृ. २३४)

प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ।। (पृ २६२)

संत का संगु वडभागी पाईऐ ।।
संत की सेवा नामु धिआईऐ ।। (पृ २६५)

साध संगि जपिओ हरि राइ ।। (पृ ३९०)

नानक जपीऐ मिलि साधसंगति
हरि बिनु अवरु न होरु ।। (पृ ४०५)

गुन गोबिंद नित गाईऐ ।।
साधसंगि मिलि धिआईऐ ।। (पृ ६२४)

हरि के संत जपिओ मनि हरि हरि
लगि संगति साध जना की ।। **(पृ. ६६८)**

मनि जपीऐ हरि जगदीस ।।
मिलि संगति साधू मीत ।। (पृ ६६९)

साध संगि हरि हरि नामु चितारा ।। (पृ ७१७)

मनि तनि प्रभु आराधीऐ मिलि साध समागै ।। (पृ ८१७)

साध संगति गुर सबदु कमाई । (वा.भा.गु १६/१)

साध संगति द्वारा प्रभु का नाम हृदय में बसता है —

साधसंगति मनि वसै साचु हरि का नाउ ।। (पृ. ५१)

मिलि संगति मनि नामु वसाई ।। (पृ ९५)

सतसंगति साधू लगि हरि नामि समाईऐ ।। (पृ ६४३)

संत मंडल महि हरि मनि वसै ।। (पृ. ११४६)

सतसंगति हरि मेलि प्रभ हरि नामु वसै मनि आइ ।।(पृ. १४१७)

साधसंगति गुरु सबदु वसाइआ ।। (वा.भा.गु. ७/११)

साध संगति द्वारा ही मन की मैल मिटती अथवा कटती है तथा मन निर्मल होता है —

संतसंगि हरि सिमरणा मलु जनम जनम की काटि ।। (पृ. ४८)

हरि अंम्रित सरु गुरि पूरिआ
मिलि संगती मलु लहि जाइ ।। (पृ. २३४)

साधसंगि मलु सगली खोत ।। (पृ. २७१)

साधसंगि होइ निरमला नानक प्रभ कै रंगि ।। (पृ. २९७)

मन की कटीऐ मैलु साधसंगि वुठिआ ।। (पृ. ५२०)

साधसंगि मलु लाथी ।।
पारब्रहमु भइओ साथी ।। (पृ. ६२५)

साधसंगि जो हरि गुण गावै सो निरमलु करि लीजै ।।(पृ.७४७)

जनम जनम की हउमै मलु लागी
मिलि संगति मलु लहि जावैगो ।। (पृ. १३०९)

साध संगति द्वारा मन टिकाव में आता है तथा वश में आता है —

साध कै संगि न कतहूं धावै ।।
साधसंगि असथिति मनु पावै ।। (पृ. २७१)

साध कै संगि न कबहू धावै ।। (पृ. २७१)

धधा धावत तउ मिटै संतसंगि होइ बासु ।। (पृ. २५७)

सतसंगति साध पाई वडभागी मनु चलतौ भइओ अरूड़ा ।।
(पृ. ६९८)

बिस्राम पाए मिलि साधसंगि ता ते बहुड़ि न धाउ ।। (पृ ८१८)

जा कउ क्रिपा करी जगदीसुरि **तिनि साधसंगि मनु जिता ।।** (पृ ११९७)

साध संगति द्वारा 'भय-भ्रम' भी मिटता है —

साधसंगि भै भरम मिटाइआ ।। (पृ १९३)

साधसंगि कछु भउ न भराती ।। (पृ १९४)

भ्रमु कटीऐ नानक साधसंगि दुतीआ भाउ मिटाइ (पृ २९६)

साधसंगि मिटे भरम अंधारे ।। (पृ ३८९)

मिलत संगि सभि भ्रम मिटे गति भई हमारी ।। (पृ ८१०)

भ्रमु भउ मिटिआ साधसंग ते दालिद न कोई कालका ।। (पृ १०८५)

साध संगति द्वारा ही 'आत्म प्रीत' लगती है —

प्रेम भगति नानक सुखु पाइआ साधू संगि समाई ।। (पृ ३८४)

नानक प्रीति लगी तिन राम सिउ भेटत साध संगात ।। (पृ ५२१)

सची संगति सचि मिलै सचै नाइ पिआरु ।। (पृ ५८६)

संता संगति मिलि रहै ता सचि लगै पिआरु ।। (पृ ७५६)

मिलि इकत्र होए सहजि ढोए मनि प्रीति उपजी माझीआ ।। (पृ ८४६)

हरि के संत मनि प्रीति लगाई जिउ देखै ससि कमले ।। (पृ ९७५)

संता संगि होइ एक परीति ।। (पृ ११४६)

अंमृत की प्राप्ति भी साध संगति द्वारा होती है —

सतां संगि निधानु अंम्रितु चाखीऐ ।। (पृ ९१)

करि सेवा संता अंम्रितु मुखि पाहा जीउ ।। (पृ १७३)

साधसंगि अंम्रित रसु भुंचा ।। (पृ २७१)

हरि अंम्रित पान करहु साधसंगि ।। (पृ २९९)

अंम्रितु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ।। (पृ ३१८)

साधसंगि हरि अंम्रितु पीजै ।। (पृ ५६३)

अंम्रितु हरि का नामु साध संगिरावीऐ जीउ ।। (पृ ६९१)

साध संगति द्वारा पापों से छुटकारा होता है —

साधू कै संगि पाप पलाइन ।। (पृ २७१)

साध संगि पापा मलु खोवै ।। (पृ २७४)

भगत जना कै संगि पाप गवावणा ।। (पृ ६५२)

जो हरि सेवहि संत भगत तिन के सभि पाप निवारी ।। (पृ. ६६६)

संत मंडल महि पाप बिनासनु ।। (पृ. ११४६)

'साध संगति' द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार अथवा 'पाँच दूत' वश में होते हैं —

साध कै संगि आवहि बसि पंचा ।। (पृ २७१)

काम क्रोधु लोभु मोहु संगि साधा भखे ।। (पृ ३१८)

साधू संगति दीओ रलाइ ।।
पंच दूत ते लीओ छडाइ ।। (पृ ३३१)

गोसटि भई साध कै संगमि काम क्रोधु लोभु मारिआ । (पृ. ६७४)

पंच चोर आगै भगे जब साध संगेत ।। (पृ ८१०)

कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिदारना ।। (पृ. ९१५)

साध संगति द्वारा द्वैत भाव भी नाश होता है —

चार विचार बिनसिओ सभ दूआ ।।
साधसंगि मनु निरमल हूआ ।। (पृ २५४)

भ्रमु कटीऐ नानक साधसंगि दुतीआ भाउ मिटाइ ।। (पृ. २९६)

साध संगति में विचरण करते हुए यम से दोषमुक्त होते हैं —

साधू संगि तरीजै सागरु कटीऐ जम की फासा जीउ ।।(पृ. १०८)

भेटत साधू संग जम पुरि नह जाईऐ ।। (पृ ४५६)

जा को रे करमु भला तिनि ओट गही संत पला
तिन नाही रे जमु संतावै साधू की संगना ।। (पृ ६७८)

कोटि अप्राधी संतसंगि उधरै जमु ता कै नेड़ि न आवै ।।(पृ. ७४८)

साधसंगि जमदूत न भेटन ।। (पृ ७६०)

जमदूतु तिसु निकटि न आवै ।।
साधसंगि हरि कीरतनु गावै ।। (पृ. १०७९)

संत मंडल महि जमु किछु न कहै ।। (पृ. ११४६)

साध संगति द्वारा ही 'दुरमति' नाश होती है तथा विवेक बुद्धि प्राप्त होती है —

साधसंगति मिलि बुधि बिबेक ।। (पृ ३७७)

कवल प्रगास भए साधसंगे दुरमति बुधि तिआगी ।। (पृ ५०३)

वडभागी साधसंगु परापति **तिन भेटत दुरमति खोई ।।** (पृ.६१७-६१८)

जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी ।।(पृ. ६३३)

दुरमति मैलु गई सभ नीकलि सतसंगति मिलि बुधि पाइ ।।(पृ. ८८१)

सतसंगति की धूरि परी उडि नेत्री **सभ दुरमति मैलु गवाई ।।**(पृ१२६३)

साध संगति द्वारा ही 'प्रभु-मार्ग' का ज्ञान होता है —

मारगु प्रभ का हरि कीआ संतन संगि जाता ।। (पृ ११२२)

कोई आवै संतो हरि का जनु संतो मेरा प्रीतम जन संतो
मोहि मारगु दिखलावै ।। (पृ१२०१)

कबीर संत की गैल न छोडीऐ मारगि लागा जाउ ।।
पेखत ही पुंनीत होइ भेटत जपीऐ नाउ ।। (पृ. १३७१)

क्रमशः.....